OM - 18 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 11/29/2021 11:31 AM Page 3

वडोदरा-अटलादरा(गुज.)। राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी के सेवा समर्पण की स्वर्ण जयंती देव दिवाली के अवसर पर बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर केक काटते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी, डॉ. विजय शाह, उद्योगपति राजन शाह, मंगलवाड़ी उप क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. राज दीदी, कारेलीबाग सेवाकेन्द्र संचालक डॉ. जयंत भाई, वाघोड़िया सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. तर्लिका बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अरुणा बहन, सह संचालिका ब्र.कु. पूनम बहन तथा अन्य।

स्कॉटलैंड-यू.के.। ग्लासगो में आयोजित क्लाइमेट टॉक्स-सीओपी 26 के दौरान राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी,एडिशनल चीफ ऑफ ब्रह्माकुमारीज़ एंड रीप्रेज़ेन्टेटिव ऑफ द ब्रह्माकुमारीज़ एट द युनाइटेड नेशन्स ने सम्बोधित किया। जॉर्ज स्क्वायर पर इंटरफेथ प्रेयर व मेडिटेशन विजिल तथा स्कॉटिश इंटरफेथ वीक के उद्घाटन अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने विश्व के क्रिटिकल सिचुएशन पर प्रकाश डाला। इसके साथ ही ब्रह्माकुमारीज़ एवं लुथरन वर्ल्ड फेडरेशन द्वारा गार्नेट हिल सिनेगॉग में 'इंटरफेथ गैदरिंग इन स्पीरिट ऑफ तलानोआ डायलॉग' का आयोजन हुआ जिसमें ब्र.कु. जयंती दीदी ने प्लैनेट के प्रति शुभ और शुद्ध भावना रखते हुए कर्म करने के लिए प्रेरित किया। इन सभी कार्यक्रमों के दौरान बड़ी संख्या में फेथ लीडर्स, पॉलिटीशियंस, नेगोशिएटर्स तथा अन्य लोग शामिल हुए एवं सभी ने अपने-अपने विचार रखे।

योगाभ्यासी के लिए ध्यान देने योग्य बातें

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

जब कोई व्यक्ति योगाभ्यास करने लगता है, तब तो योगी के लिए अपनी कुछ मर्यादायें होती हैं, उसकी साधना के लिए अपनी प्रकार की एक आचार-संहिता और व्यवहार-संहिता होती है। योगी को उच्च लक्ष्य की ओर बढ़ना होता है और उच्च मर्यादाओं का पालन करना होता है। एक साधारण एवं संसारी व्यक्ति की तुलना में तो योगी से श्रेष्ठ कर्मों की अपेक्षा की जाती है। भोगी को तो नून-तेल-लकड़ी ही याद रहती है परंतु योगी तो जीवन-निर्वाह के साधनों को अर्जित करने के साथ प्रभु-स्मृति में लवलीन रहने का पुरुषार्थ करता है। यदि वह भी नून-तेल-लकड़ी ही को याद करता रहे और उसके लिए खून-जेल-हथकड़ी वाले काम करे तब वह योगी कैसा?

यहाँ खून-जेल-हथकड़ी का सामान्य अर्थ नहीं है। यदि कोई दूसरे से ऐसे कटु शब्द बोलता है कि वे तलवार की तरह उसके मन को घायल करते हैं तो गोया वह खून ही करता है। यदि वह निकृष्ट कर्मों द्वारा कर्म-बंधन में स्वयं को जकड़ता है तो गोया वह हथकड़ी लगवाने का ही काम करता है। यदि वह दूसरों को दुःख देता है और स्वयं भी दुःखी होता है तो गोया वह जेल में ही तो है। परंतु चूंकि योगाभ्यासी आत्मा भी द्वापर युग से मनोविकारों में अधिकाधिक ग्रसित होते-होते उनके रंग में रंग गयी होती है, अतः अपनी 'पुरानी आदत' या संस्कारों के वशीभूत हो कर वह कुछ-न-कुछ ऐसे कर्म कुछ काल तक करती है जो महानता की कोटि के न होकर मध्यम श्रेणी के होते हैं। हो सकता है कि योगाभ्यासी को प्रारंभ में जिह्वा के रस से पूर्णतः उपराम होने में कठिनाई हो या किसी सुंदर देह के प्रति उसके नेत्र आकर्षित होते हों अथवा दुर्व्यवहार करने वाले किसी व्यक्ति के प्रति उनके मन में कुछ जोश पैदा होता हो या अभिमान की आदत के कारण वह कभी-कभी रोब डालता हो। परंतु उसका पूरा पुरुषार्थ तो इन से मुक्ति प्राप्त करने के लिए ही होना चाहिए और दिनोंदिन उसके पुराने संस्कारों का वेग तो कम ही होना चाहिए। उसमें ऐसी जागृति तो आ ही जानी चाहिए कि वह किसी को भी दुःख न दे, वो मानवता के नीचे के दर्ज़े का व्यवहार न करे, उससे जो छोटे हों, आयु में अनुज और पद में कनिष्ठ हों, उनसे भी वो दुर्व्यवहार न करे।

इसके विपरीत यदि वह अपने स्थान, अधिकार, प्रतिष्ठा इत्यादि के आधार पर किसी से बदला लेता है, किसी को नीचा दिखाता है, किसी अनाधिकारी को तो तख्त पर बिठा देता है और किसी योग्य को अपनी घृणा के कारण तख़ते पर चढ़ा देता है, किसी को डांट-डपट कर उसका जीना ही मुश्किल कर देता है या 'सेवा' का नाम लेकर यश बटोरने के लिए दूसरों को उससे वंचित करता है, तब उसे 'योगी' कैसे कहा जायेगा? हाँ, वह कुछ समय मन को योगयुक्त करने का अभ्यास करता होगा परंतु उससे अधिक तो वह विकर्मों ही का संचय करने में लगा रहता है। अतः वह तो भुक्त-भोगी भी है।

ऐसे व्यक्ति के बारे में तो यह कहना उचित होगा कि उसने स्वार्थ और लोभ छोड़ा नहीं है बल्कि अब वह नए प्रकार का लोभ पहले से भी अधिक करने लगता है। उसकी कामनायें बढ़ी ही हैं। उसके ईर्ष्या-द्वेष भी मरे नहीं हैं बल्कि उनका केवल रूप बदला है। किसी-किसी के बारे में तो यह कहना भी उचित ही होगा कि उसकी तृष्णाओं में वृद्धि हुई है और उसके मनोविकार बलवान हो गये हैं।

अतः योगाभ्यासी को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि वह नये रूप में नून-तेल-लकड़ी को इकट्ठा करने में न लग जाये बल्कि उसने जिस लक्ष्य को अपनाया है, उस ही की ओर बढ़ता चले। वह नये प्रकार की मोह-माया से मलीन होने की बजाय प्रभु-स्मृति में लवलीन हो जाये।

इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय रामस्नेही संप्रदाय के अनंत विभूषित महामंडलेश्वर श्री राम दयाल जी महाराज, पप्पू राम जी महाराज व अन्य संत गणों को दीपावली पर्व की बधाई देने व माउंट आबू आने का निमंत्रण देने के पश्चात् उनके साथ हैं ब्र.कु. नारायण भाई व ब्र.कु. दीपाली बहन।

जालंधर-ग्रीन पार्क(पंजाब)। दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ज्वाइंट कमिश्नर म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन जालंधर मेजर अमित सरीन, राकेश कुन्द्रा, राजेश कोचर, ब्र.कु. रामदयाल कश्यप, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रेखा बहन तथा अन्य।

आगरा-नवपुरा(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ग्राम बुढ़ेरा में राष्ट्रीय महिला किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ग्राम प्रधान जी की धर्मपत्नी श्रीमति शकुंतला देवी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु बहन तथा ब्र.कु. शालू बहन,टूंडला। इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे।

भोपाल-रोहित नगर(म.प्र.)। दीपावली के अवसर पर चैतन्य देवी लक्ष्मी की झाँकी में उपस्थित हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. रीना तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

जम्मू। नरेन्द्र सिंह जम्वाल,चेयरमैन,जे.एम.सी. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुदर्शन बहन।

राजकोट-रणछोड़नगर(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पुलिस स्टेशन में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में पी.ए.आई. भरत कटारिया, अन्य पुलिसकर्मी, ब्र.कु. शीतल बहन तथा अन्य।